RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.07 | No.03 | March 2022 | pp. 35-37
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Environment in Contemporary Hindi Poetry
समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण

*[1]Manjula Chaturvedi and [2]Dr. (Prof.) Sunita Singh (Sudha)

[1]PhD, Research Scholar, OSGU, Hisar, Haryana & Founder and President of Yash Manjulam Seva Trust Ahmedabad Gujarat
[2]Research Guide & H.O.D., Hindi Department, OSGU, Hisar, Haryana

Abstract

Environment today is a multifaceted term. The problem of environment is one of the most discussed problems in contemporary times. Environment has become the most discussed topic today. It is being discussed in many academic and non-academic contexts, for example, environment and society, green aesthetics etc.
A new form of environment is emerging in Hindi literature, especially in contemporary Hindi literature. Contemporary poetry is composed by being compelled by the deep-pressures of thoughts. Here the normal human has come in the centre, ending the debate of great human and small human. In fact, the poetry of every era tries to define the human of its era.
Therefore, in the creation of poetry, it is necessary to study the changing state of mind due to the effects of continuous circumstances. In a broad sense, it can be said that the environment is the basic inspiration of contemporary poetic creation.

Keywords: *Environment, Contemporary, Hindi Literature, Aesthetics*

Abstract in Hindi

पर्यावरण आज एक बहुआयामी शब्द है। पर्यावरण की समस्या समकालीन समय में सबसे अधिक चर्चित समस्या में एक है। पर्यावरण आज सबसे अधिक चर्चा का विषय बन चुका है । उदाहरण पर्यावरण एवं समाज हरित सौंदर्यशास्त्र आदि अनेक एकेडमिक और गैर अकादमिक संदर्भ में इसकी चर्चा हो रही है।
हिंदी साहित्य में विशेष रुप से समकालीन हिंदी साहित्य में पर्यावरण का नया रूप उभर कर आ रहा है। समकालीन कविता विचारों के गहरे – दवाबों से विवश होकर रची जाती है। यहां महामानव और लघु मानव की बहस को समाप्त करता हुआ सामान्य मानव केंद्र में आ गया है। वस्तुतः हर युग की कविता अपने युग के मानव को परिभाषित करने की कोशिश करती है।
इसलिए कविता का सृजन कर्म में निरंतर परिस्थितियों के घात – परिघात से बदलती हुई मनोस्थिति का अध्ययन आवश्यक है ।रचना अपने यथार्थ की तक राह से ही रह बनाती है। व्यापक अर्थ में कह सकते हैं की परिवेश ही समकालीन काव्य सर्जना की मूल प्रेरणा है।

Keywords: *पर्यावरण, समकालीन, हिंदी साहित्य, सौंदर्यशास्त्र*

Article Publication

Published Online: 23-Mar-2022

***Author's Correspondence**

Manjula Chaturvedi

PhD, Research Scholar, OSGU Hisar Haryana & Founder and President of Yash Manjulam Seva Trust Ahmedabad Gujarat

manjulahin201@osgu.ac.in

10.31305/rrijm.2022.v07.i03.006

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

प्रस्तावना–

समकालीन विश्व साहित्य के साथ तमाम भारतीय साहित्य में विशेष रूप से कविता में पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता पर जोरदार समर्थन हो रहा है। मनुष्य एवं प्रकृति का संबंध भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से ही रहा है ,किंतु मनुष्य एवं प्रकृति का आपस में संबंध बताने वाले समकालीन कवियों का अपना दृष्टिकोण बदल गया है। समकालीन में कवि की अभिव्यक्ति और संवेदना समस्याओं पर आधारित हो गई है। आदिकवि वाल्मीकि से वर्तमान काल की सृजनशीलता इंसान की 'आह' से भरा है। उस समय प्रकृति को मां निषाद से पुकारा जाता था परंतु समय के साथ मनुष्य ने मां निषाद को उपेक्षित किया तभी से मानव प्रकृति से दूर होता चला गया। मानव द्वारा मान वेतन प्राणियों का शोषण करने और कृति पर्यावरण थोप कर अपने द्वारा किए जाने वाले और मानवीय कार्यों को छुपाने की कोशिश हो रही है।

पूर्व में साहित्य के मूल्य में मानव की वर्ग सजगता या इसमें की भावना प्रखर रूप में थी इसलिए मानव प्रकृति में मानवीयता को ढूंढने का प्रयास करता आ रहा था। काव्य का प्रमुख आर्जवन है , आर्जवन संस्कृत का शब्द है, जो हिंदी में आयत्त बन गया है।

समकालीन कविता के रचना कर्म में परिवेश के प्रति गहरा लगाओ का भाव निरंतर बड़ा है। काव्यात्मक स्तर पर कविताओं की नाटकीय संरचना में परिवेश की पूरी हिस्सेदारी है। परिवेश का आतंक, भय, विद्रूपता एवं आत्म निर्वासन को कवियों ने नए नए अंदाज में उजागर किया है।
समकालीन हिंदी कविता के परिवेश का रंग गाना है

धूमिल का " मोचीराम " इस सच्चाई को कहता है:

"जो असलियत और अनुभव के बीच
खून के किसी काम जात मौके पर कायर हैं
वह बड़ी आसानी से कह सकता है
यार तुम मोची नहीं शायर है।"

सामाजिक आवश्यकता के प्रति आस्थावान कवि सफल समकालीन कभी हो सकता है। केदारनाथ अग्रवाल हिंदी जाति के वैसे ही अन्यतम कवि हैं जैसे कबीर, सूर , तुलसीदास आदि। हिंदी प्रदेश हवा पानी मिट्टी नदी नाले पेड़ पौधे पक्षी खेत खलिहान ढोल जानवर हल बैल किसान मजदूर शोषक शोषित आज की अनेक छवियों और लोक लीलाओं की इकाई है। पुरुवा और पछुआ हवाओं से आर्द्र और संतप्त यह गाय क्षेत्र अपनी उदारता और संकीर्णता के साथ जिस कवि में झलकता है वह जिसका चिंतन व मनन करता है यह स्वाभाविक रूप से केदारनाथ अग्रवाल की रचनाएं हो सकती हैं कहा जा सकता है की रचना अपने समय की प्रसव पीड़ा से ही जन्म लेती है।

यह हिंदी कविता का परिवर्तन काल भी कहा जा सकता है। केदार जी इस जड़ होती सौंदर्य अभिरुचि एवं औद्योगिक सभ्यता से प्रभावित हुए बिना प्रकृति के साथ अपना जीवित रिश्ता बनाए रखा और निरंतर लिखते रहें।

समकालीन कविता में एक बात प्रमुख रूप से सामने उभर कर आती है कि इन कविताओं में केवल परिवेश के प्रति सजगता ही नहीं बल्कि इनमें परिवेश के प्रति प्रतिबद्ध दृष्टिकोण भी है। अधिकतर कविताओं में नदी को प्रतीकात्मक रूप से चित्रित किया गया है ।पर्यावरण की यदि हम बात करें तो नदी तालाब वन पेड़ पहाड़ इत्यादि अनेकों विषयों पर रचनाएं हुई।

भारत अनगिनत नदियों का देश है और साथ ही उन नदियों से जुड़ी अनेक कविताओं का भी तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी। "कविता नदी "शीर्षक संग्रह निश्चित रूप से नदी पर लिखी गई कविताओं को एक जगह लाने का प्रयास है। इस संग्रह के द्वारा कई रचनाकारों को एक साथ लाने का प्रयास सार्थक रहा।

समकालीन कविता में पर्यावरण के साथ जीवन भी मौजूद है -उदाहरण

सियारामशरण गुप्त -

" पेय पय अंतर के स्नेह का पिलाती हुई खेल खिलाती हुई,नन्हे मुन्ने लहरों को गोद में ले के निज गोद में....नित्य नई, यमुने हैं। तेरा यह शांत रूप सौम्या कार जान पड़ता था यही। अंतर स्थल का विकास चंचला की चंचलता- तुल्य हे
पय: स्विनी ! तेरी यह लोग लीला थी न आत्मघातिनी ,"

समकालीन हिंदी कविता में ज्ञानेंद्रपति की कविताएं प्रमुख स्थान रखती हैं। इनकी रचनाओं में जीवन और जगत को मथने भेदने वाले समकालीन मुद्दों की अनिवार्य अनुगूंज है। इनकी कविताओं में पर्यावरण का आज है। इनकी कविता केवल कथनी नहीं बल्कि करनी है। "गंगा तट " की कविताएं समकालीन काव्य -भूगोल पर दूसरा तक लगती हैं।

"गंगा स्नान " , "गंगा तट " काव्य संग्रह की एक कविता है,पर्यावरण के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण कविता है- "नदी और साबुन " इस कविता के माध्यम से कवि ने बढ़ते हुए प्रदूषण से विषैली होती जा रही नदियों पर अपनी गहरी चिंता एवं आकुलता व्यक्त की है।

कवि लिखते हैं -

नदी !
तू इतनी दुबली क्यों है
और मैली - कुचैली
किसने तुम्हारा नीर हरा
कल कल में कलुष भरा
बाघों के जुठारने से तो कभी दूषित नहीं हुआ तुम्हारा जल आह.....

मानव जीवन और प्रकृति का अटूट संबंध है। मानव जीवन पर असंतुलित पर्यावरण के घातक परिणामों की ओर इशारा करते हैं। मनुष्य जब प्रकृति के साथ दानवी हरकतें करता है तो इसका परिणाम दुष्परिणाम प्रकृति के विनाश के साथ-साथ मानव को भी भोगना पड़ता है। अतः मनुष्य के लिए प्रकृति एक आवश्यक उपादान है प्रकृति के सौंदर्य के प्रति सचेत होकर कवि कहते हैं - हर ऋतु में सबसे ज्यादा नई कोई लगती है तो पृथ्वी' एक पत्ता एक फूल एक फल एक अन्य की बाली बांसी जो का ताजा झोंका सब कुछ पृथ्वी है।

निष्कर्ष :

अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि प्रकृति या पर्यावरण पर सदियों से काव्य रचा जाता रहा है। हमारे वेद पुराण इत्यादि प्रकृति के सौंदर्य ज्ञान में सबसे आगे थे। मध्यकाल तक प्रकृति का वर्णन कविता में प्रकृति के सौंदर्य को लेकर होता रहा है।

समकालीन कवियों ने भी इस क्षेत्र में अपनी पूर्ण जिम्मेदारी निभाई परंतु समकालीन पर्यावरण की कविता का स्वरूप सौंदर्य के स्थान पर प्रदूषण ले चुका था समकालीन में सभी रचनाकार पर्यावरण में संतुलन हेतु आगे आकर अपने काव्य द्वारा समाज को प्रेरित करने का प्रयास कर रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

समकालीन हिंदी कविता में पर्यावरण- डॉ. आर जयचंद्रन

पर्यावरण विमर्श और हिंदी कविता- डॉ बाबू जोसेफ

पर्यावरण ज्ञानेंद्रपति की कविताओं में- डा. राय जोसेफ

समकालीन कविता में पर्यावरण संरक्षण की आवाज केदारनाथ सिंह के संदर्भ में- डॉ. के मोहनन पिल्ले